समण संस्कृति संकाय

जैन विश्व भारती, लाडनूँ

जैन विद्या परीक्षा : सत्र 2018–19

अ

जैन विद्या - भाग - 6

(जैन तत्त्व विद्या खण्ड-2 - 3)

समय : ½ घण्टा प्रश्न पत्र : प्रथम पूर्णांक 30

रोल नं. अंको में ....

शब्दों में......................................

नोट :– सभी प्रश्नों के अंक समान हैं। उत्तीर्णांक 100 में से 40 अंक होंगे।

(A) अ, ब, स, द में से सही उत्तर वाले वर्ण को सामने अंकित कोष्ठक ( ) में भरें।

1. देवता में संहनन होता है–
   (अ) वज्र ऋषभ नाराच (ब) नाराच
   (स) ऋषभ नाराच (द) कोई भी नहीं ( )
2. परिवर्तना का अर्थ है–
   (अ) परिवर्तन करना (ब) पूछना
   (स) दोहराना (द) अध्ययन करना ( )
3. मिथ्या दोषारोपण करने वाली प्रवृत्ति से बंधने वाला पाप कर्म–
   (अ) पैशुन्य (ब) अभ्याख्यान
   (स) पर–परिवाद (द) माया–मृषा ( )
4. वस्तु से संलग्न उसके अविभाज्य हिस्से को कहा जाता है–
   (अ) देश (ब) स्कंध
   (स) प्रदेश (द) परमाणु ( )
5. दसवें गुणस्थान में प्रति समय बंध होता रहता है–
   (अ) सात कर्मों का (ब) आठों कर्मों का
   (स) छः कर्मों का (द) चार कर्मों का ( )
6. पाँच आश्रव में व्यक्त आश्रव है–
   (अ) प्रमाद (ब) कषाय
   (स) अव्रत (द) योग ( )
7. सामान्य या नैसर्गिक मनोवृत्ति को कहते हैं–
   (अ) आहार संज्ञा (ब) ओघ संज्ञा
   (स) लोक संज्ञा (द) मान संज्ञा ( )
8. जिस शरीर में ऊपर का भाग छोटा और नीचे का भाग बड़ा हो वह कहलाता है–
   (अ) हुण्डक संस्थान (ब) सादि संस्थान
   (स) वामन संस्थान (द) न्यग्रोध परिमण्डल संस्थान ( )

9. बैठे-बैठे नींद आना है-
(अ) निद्रा (ब) निद्रा-निद्रा
(स) प्रचला (द) प्रचला-प्रचला ( )

10. रूक्ष स्पर्श की बहुलता से होता है-
(अ) गुरु स्पर्श (ब) मृदु स्पर्श
(स) कर्कश स्पर्श (द) लघु स्वर्श ( )

(B) सही और गलत का चयन (✓) व (✗) का चिन्ह लगावें-

(1) निर्जरा धर्म संसार के सब जीवों के हो सकता है। ( )
(2) संवर का अर्थ है-आत्म प्रदेशों का स्थिरीभूत होना। ( )
(3) संयमी पुरुष को दिये जाने वाले मकान के निमित से होने वाला पुण्य शयन पुण्य है। ( )
(4) परमाणु का वर्णांतर, गंधातर, रसांतर, स्पर्शांतर होना सम्मत माना गया है। ( )
(5) सभी समुद्घातों में आत्म प्रदेश शरीर से बाहर निकलते हैं। ( )
(6) अस्त्र का अर्थ है-कोण ( )
(7) चौथे गुणस्थान में मिथ्यात्व चला जाता है और सम्यक्तव प्राप्त हो जाता है। ( )
(8) ऋजु गति करने वाला जीव अनाहारक होता है। ( )
(9) देव और नारक जीव उपपातप्न कहलाते हैं। ( )
(10) जिस कर्म की स्थिति जितनी बंधी हुयी है और जैसा रस है उसे किसी निमित्त से बढा लेना अपवर्तन है। ( )

(C) रिक्त स्थान की पूर्ति करें -

(1) अनुप्रेक्षा का संबंध ध्यान और.................................दोनों के साथ है।
(2) एकान्तवादी दर्शनों की इच्छा का नाम...है।
(3) कर्म वर्गणा का आत्म प्रदेशों के साथ संबंध होना............................है।
(4) क्षायिक चारित्र का अर्थ है...।
(5) ....का अर्थ है विसर्जन करना छोड़ना।
(6) भिक्षाचरी का दूसरा नाम...है।
(7) अशुभ प्रवृत्ति का सम्पूर्ण निरोध...संवर है।
(8) आयत और.................................एक ही अर्थ के दो वाचक शब्द है।
(9) आठों वर्गणाओं में सबसे सूक्ष्म वर्गणा...है।
(10) परमाणु..की सबसे छोटी इकाई है।

समण संस्कृति संकाय
जैन विश्व भारती, लाडनूँ

जैन विद्या परीक्षा : सत्र 2018–19 **ब**

जैन विद्या - भाग - 6
(जैन तत्त्व विद्या खण्ड-2 - 3)

समय : 2½ घण्टे प्रश्न पत्र : प्रथम पूर्णांक 70

नोट –उत्तीर्णांक 100 में से 40 अंक होंगे।

(A) संक्षिप्त उत्तर दें– 10×2=20

1. अमूढ़ दृष्टि के बारे में लिखें।
2. सम्यक्तव के लक्षण वाला पद्य लिखें।
3. औपशमिक सम्यक्तव किसे कहते हैं? इसकी स्थिति कितनी है?
4. शब्द के प्रकार बताते हुए इसकी उत्पति के स्थान बताएं।
5. भवोपग्राही कर्म किसे कहते हैं? ये कितने हैं? नामोल्लेख करें।
6. सत्यानर्द्धि निद्रा क्या है?
7. नाम कर्म और गौत्र कर्म को किसके सदृश बताया गया है?
8. कर्म की अवस्थाओं का नामोल्लेख करें।
9. पंडित मरण किसे कहते हें?
10. मिथ्यात्व आश्रव किसे कहते हें?

(B) किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर दें– 10×5=50

1. समुद्घात किसे कहते हैं? उसके प्रकार बताते हुए किन्हीं दो के बारे में बताएं।
2. क्रिया व अर्थ बताते हुए उसके पाँच प्रकारों के बारे में बताएं।
3. ज्ञान क्या है? उसके कितने आचार हैं? उनके बारे में लिखें।
4. लोकोत्तर धर्म की पहचान के लक्षण बताएं।
5. ओज आहार के बारे में बताएं।
6. समूर्च्छिम जीव किसे कहते हैं? इनमें कौन–कौन आते हैं?
7. मोक्ष के चार हेतुओं का संक्षिप्त वर्णन करें।
8. ध्यान किसे कहते हैं। शुभ ध्यान कौनसे है? वर्णन करें।
9. श्रमण धर्म के कितने प्रकार है? नामोल्लेख करते हुए किन्हीं पांच का अर्थ बताएं।
10. आत्मा के मूलगुणों के आवारक, विकारक, अवरोधक और शुभाशुभ संयोग के निमित भूत कर्म कौन–कौन से हैं?
11. संहनन किसे कहते हैं? उसके प्रकारों की संक्षिप्त जानकारी दें।

समण संस्कृति संकाय

जैन विश्व भारती, लाडनूँ

जैन विद्या परीक्षा : सत्र 2018–19

अ

जैन विद्या - भाग - 6

(जैन धर्म : जीवन और जगत)

समय : ½ घण्टा　　प्रश्न पत्र : द्वितीय　　पूर्णांक 30

रोल नं. अंको में ....

शब्दों में....................................

नोट :– सभी प्रश्नों के अंक समान हैं। उत्तीर्णांक 100 में से 40 अंक होंगे।

(A) अ, ब, स, द में से सही उत्तर वाले वर्ण को सामने अंकित कोष्ठक ( ) में भरें।

1. देवगति का हेतु है–
(अ) अल्पारंभी　(ब) मात्सर्य रहित
(स) सराग संयम　(द) अल्प परिग्रही　(　　)

2. जीवों की सर्वाधिक संख्या है–
(अ) मनुष्य गति में　(ब) नरक गति में
(स) तिर्यंच गति में　(द) देव गति में　(　　)

3. पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु इन सबमें स्पर्श होते हैं–
(अ) आठ　(ब) चार
(स) दो　(द) एक भी नहीं　(　　)

4. आगम की भाषा में पानी की एक बूंद में जितने जीव है उन सबके शरीर को ....बड़ा करे तो जंबूद्वीप में भी नहीं समा सकते–
(अ) लीख के समान　(ब) खस–खस के दाने के समान
(स) सरसों के दाने के समान　(द) आंवले के समान　(　　)

5. आचार्य भिक्षु ने नौ तत्त्वों क रूपक में जल निष्कासन प्रक्रिया से पानी का निकलना बताया है–
(अ) संवर　(ब) पुण्य–पाप
(स) निर्जरा　(द) बंध　(　　)

6. विज्ञान के अनुसार प्रकाश की गति प्रति सैकेन्ड है–
(अ) 1 लाख 80 हजार मील　(ब) 1 लाख 75 हजार मील
(स) 1 लाख 40 हजार मील　(द) 1 लाख 86 हजार मील　(　　)

7. अनेकान्त के सबसे पहले प्रवक्ता थे–
(अ) आईंस्टीन　(ब) भगवान महावीर
(स) भगवान बुद्ध　(द) न्यूटन　(　　)

8. आस्तिक्य का अर्थ है–

(अ) अनासक्ति (ब) मुमुक्षा

(स) सत्य निष्ठा (द) अस्तित्व ( )

9. एक निश्चित अवधि के लिए हिंसा आदि का त्याग करना है–

(अ) अहिंसा अनुव्रत (ब) देशावकासिक व्रत

(स) अनर्थदण्ड विरति (द) दिग्विरती ( )

10. प्रथम आगम वाचना हुयी–

(अ) वी.नि. 168 में (ब) वी.नि. 260 में

(स) वी.नि. 160 में (द) वी.नि. 130 में ( )

(B) सही और गलत का चयन (✓) व (✗) का चिन्ह लगावें–

(1) इलेक्ट्रोन टनेलिंग स्केनर वस्तु को 10 लाख गुना बड़ा कर दिखाने वाला यंत्र है। ( )

(2) जो वृति आत्मा को उत्पन्न करती है उसे कषाय कहा जाता है। ( )

(3) जीव और पुद्गल अनन्त द्रव्य है, शेष द्रव्य एक–एक है। ( )

(4) मोक्ष की प्राप्ति केवल मनुष्य गति से ही संभव हैं। ( )

(5) देवों के पांच ही पर्याप्तियां होती हैं। ( )

(6) संसार में जितने प्राणी है वे सब यौगिक है। ( )

(7) पर्याप्ति और प्राण का वियोग ही जीवन है। ( )

(8) भिक्षाचरी का दूसरा नाम वृत्ति संक्षेप है। ( )

(9) परमाणु में मृदुता, कठोरता, हल्कापन, भारीपन नहीं होता। ( )

(10) विज्ञान आज भी मानता है कि एटम को तोड़ा नहीं जा सकता। ( )

(C) रिक्त स्थान की पूर्ति करें –

(1) पुद्गल की क्रिया को शास्त्रीय भाषा में................................कहते हैं।

(2) भवभ्रमण का हेतु है.....................और..।

(3) सब प्रकार की काई, कंद मूल आदि...............................वनस्पति हैं।

(4) जैन दर्शन में त्रिपदी को..भी कहते हैं।

(5) वैज्ञानिक कहते हैं कि सूई की नोक टिके उतनी हवा में लाखों जीव रहते हैं। जिन्हें...कहा जाता हैं।

(6) ज्योतिष्क देव...लोक में रहते हैं।

(7) प्राण को आधुनिक विज्ञान की भाषा में....................भी कह सकते हैं।

(8) प्राण शक्ति का मूल स्त्रोत..है।

(9) ....की स्वीकृति में ही आत्मवाद, कर्मवाद और निर्वाणवाद की सार्थकता है।

(10) ....कर्म बंधन का हेतु है और.................कर्म निरोध का।

समण संस्कृति संकाय

जैन विश्व भारती, लाडनूँ

जैन विद्या परीक्षा : सत्र 2018–19

ब

जैन विद्या - भाग - 6

(जैन धर्म : जीवन और जगत)

समय : 2½ घण्टे | प्रश्न पत्र : द्वितीय | पूर्णांक 70

नोट :– उत्तीर्णांक 100 में से 40 अंक होंगे।

(A) संक्षिप्त उत्तर दें– 10×2=20

1. पर्याप्ति किसे कहते हैं? वे कितनी है? नामोल्लेख करें।
2. अकषाय संवर किसे कहते हैं?
3. धर्म और पुण्य एक है या अलग–अलग। कैसे?
4. अठारह पापों का नामोल्लेख करें।
5. साधना के तीन बिन्दु कौन–कौन से हैं?
6. जैन दर्शन का परिणामी नित्यवाद क्या है?
7. जैन धर्म के मुख्य सिद्धान्त क्या है?
8. सर्वज्ञ के प्रवचन करने का उद्देश्य क्या है?
9. समूर्च्छिम मनुष्य कौन होते हैं।
10. व्युत्सर्ग किसे कहते हैं?

(B) किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर दें– 10×5=50

1. शरीर पर्याप्ति के कार्य को शरीर शास्त्रीय दृष्टि से समझाएं।
2. अनेकांत और स्याद्वाद का संबंध बताएं।
3. सम्यक् ज्ञान के बारे में लिखें।
4. श्रावक के पांच अणुव्रतों के फलित क्या हैं?
5. पाँच महाव्रतों की कितनी भावनाएं हैं? वर्णन करें।
6. जैन मुनि पद यात्रा क्यों करते हैं?
7. कर्म के बारे में विभिन्न दर्शनों के क्या विचार हैं?
8. जैन दर्शन के अनुसार आत्मा क्या है? संक्षिप्त में प्रकाश डालें।
9. वर्गणा किसे कहते हैं? ये कितनी है? वर्णन करें।
10. पुद्गलास्तिकाय के बारे में लिखें।
11. योग आश्रव के बारे में लिखें।